*Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education*
*Vol. XV, Issue No. 1, April-2018, ISSN 2230-7540*

# हरियाणा के दलित वर्ग के छात्राओं का शैक्षणिक स्तर का तुलनात्मक अध्ययन

**Salma Khatoon[1]* Dr. Ramesh Kumar[2]**

[1] Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

[2] Director, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

***सार –*** *जाति भेद की समस्या का सूत्रपात वैदिक कालीन समाज व्यवस्था से प्रारम्भ होता है। वर्ण व्यवस्था का जब कोई नाम लेता है तो वेदों, पुराणों, उपनिषदों और स्मृतियों में अंकित सीमित अधिकारों की ओर अनायास ही ध्यान आकर्षित हो जाता है, क्योंकि मानव की समस्त स्वाभाविक शक्तियों का पूर्ण प्रगतिशील विकास ही शिक्षा है। यदि शिक्षा के गौरवपूर्ण इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि भारतीय शिक्षा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। इसकी प्राचीनता एवं विद्वता का प्रमाण हमें मनुस्मृति से ज्ञात होता है। मनुस्मृति के अन्तर्गत शूद्रों (अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों) एवं महिलाओं को सीमित अधिकार प्रदान किये गये थे। जिनमें कर्तव्य अधिक थे और अधिकार कम। इस वर्ण व्यवस्था का आधार कर्म था लेकिन धीरे-धीरे इस वर्ग और जाति की स्थापना वंश के आधार पर होने लगी। और यहीं से शोषण प्रवृत्ति का जन्म हुआ। इस प्रकार भारतीय सामाजिक संरचना में धार्मिक वैधानिकता में सामाजिक क्रियाकलापों पर अधिकार कर उच्च वर्गों के अधिकारों तथा श्रेष्ठताओं को अक्षुण्य बना दिया, फलस्वरुप समाज के कमजोर वर्ग, आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षिक रुप से कमजोर होते चले गये और ब्राह्मण वर्ग ने अनुसूचित जातियों, जनजातियों एवं पिछड़े वर्गों को शूद्र वर्ग के अन्तर्गत मानकर इन्हे शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से वंचित कर दिया। समाजसेवी संस्थाओं की ओर से इस वर्ग विशेष की शिक्षा की कोई व्यवस्था उन्नीसवीं सदी तक नहीं की गयी।*

----------X----------

## परिचय

आज के युग में शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग बन गई है। शिक्षा मानव के मूल प्रकृति-जन्य व्यवहार को परिमार्जित करके उसमें धैर्य, सहन शीलता, त्याग, परोपकार एवं अन्य अनेक नैतिक गुणों का विकास करती है। शिक्षा ही है जो समाज के सभी वर्गों के लिए उत्पादक, उपयोगी तथा सुसंस्कृत नागरिक बनाकर देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देती है। आज के युग में निरन्तर परिवर्तन हो रहे हैं जिससे लोगों की शिक्षा से अपेक्षाएं भी बढ़ रही हैं।

वैसे शिक्षा ही वह साधन है, या माध्यम है जिसके द्वारा समाज में व्याप्त जाति, वर्गों को समाप्त किया जा सकता है ताकि समस्त मनुष्यों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके। मनुष्य-मनुष्य में किसी प्रकार का कोई वर्ग-विभाजन न हो। पिछड़े वर्ग को भी उचित शिक्षा मिले जिससे उनका पारिवारिक जीवन स्तर, आकांक्षा एवं आर्थिक स्तर उच्च हो और शिक्षा सम्बन्धी सभी समस्याओं का निराकरण हो सके।

लगभग सौ साल पहले भारत के एक महान सपूत श्री गोपालकृष्ण गोखले ने 'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव एसेम्बली' में भारतीय लोगों को शिक्षा का अधिकार देने का कानून बनाने की बात कही थी। इसके तकरीबन 90 साल बाद शिक्षा के अधिकार को एक बुनियादी हक के तौर पर शामिल करने के लिए भारत के संविधान में संशोधन किया गया है। आज हमारी सरकार सभी बच्चों को बुनियादी शिक्षा का अधिकार देने के अपने उस अहद् को पूरा कर रही है।

बच्चों को मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा देने के लिए अगस्त 2009 में संसद में कानून बनाया था। यह कानून (1 अप्रेल 2010) से लागू हो गया। संविधान की धारा 21(ए) में दिया गया शिक्षा का बुनियादी हक भी लागू हो गया है। इससे इस बात का पता चलता है कि हम बच्चों की शिक्षा और भारत के भविश्य को कितनी अहमियत देते हैं।

लेकिन स्वतन्त्रता के इतने दशकों के बावजूद भी दलित वर्ग के विद्यार्थियों को उचित शिक्षा नहीं मिल पा रही है। भारत सरकार पिछड़े वर्ग के कल्याण एवं उनकी शिक्षा पर प्रत्येक वर्ष

www.ignited.in

करोड़ों रूपये खर्च करती है, जिसका मुख्य उद्देश्य इस भारतीय समाज के अभिन्न अंग को आधुनिक प्रगति के मार्ग पर आगे लाना है। लेकिन यह वर्ग षिक्षा के प्रति इतना जागरूक नहीं है कि इन अवसरों का उचित लाभ उठा सके।

घर, परिवार, समाज, राज्य एवं देश सभी का यह दायित्व बनता है कि प्रत्येक बालक को उचित शिक्षा देकर उन्हें योग्य एवं कत्र्तव्यनिष्ठ नागरिक बनाये। लेकिन दलित वर्ग के विद्यार्थियों को उनके घर-परिवार में भी उचित वातावरण नहीं मिल पाता है, आवश्यक साधन-सुविधाएं एवं सही मार्गदर्षन नहीं मिल पाता है, जिसके कारण इनका आकांक्षा स्तर एवं शिक्षा स्तर निम्न ही रह जाता है। फलस्वरूप यह वर्ग हर तरफ से अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक, धार्मिक एवं राजनैतिक दृष्टि से काफी पिछड़ जाता है। परिणामस्वरूप इनका समाजीकरण नहीं हो पाता है।

## अध्ययन का महत्त्व

आज जातिगत सोच के कारण समाज सिकुड़ता जा रहा है। सामाजिक सोच में बदलाव एवं अन्य कारणों से हम इस ओर ध्यान न देकर अपनी आंखे मूंदे बैठे हैं। यह मानसिकता समाज का विखण्डन करती जा रही है।

दलित विद्यार्थियों को परिवार में उचित वातावरण नहीं मिल पाता, जिसके कारण अपराध, हत्याएं, चोरी, बेईमानी, अश्लीलता, अशिष्टता इत्यादि दुर्गण इनमें आ जाते हैं। पारिवारिक वातावरण का बच्चों पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। दलित विद्यार्थियों को न तो उचित शिक्षा मिल पाती है, और न ही उत्तम पारिवारिक वातावरण मिलता है। फलतः इनका आकांक्षा-स्तर भी इनसे प्रभावित होता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की आकांक्षाएं भी भिन्न-भिन्न होती हैं। यदि उचित शिक्षा और अच्छा पारिवारिक वातावरण मिलेगा तो आकांक्षा-स्तर स्वतः बढ़ेगा। आकांक्षा का स्तर व्यक्ति की आशा या महत्वाकांक्षा है जो भविष्य में दिये गए कार्य की ओर संकेत करती है। आकांक्षा स्तर ही व्यक्ति के लक्ष्यों को निर्धारित करवाती है। अतः आकांक्षा स्तर व्यक्ति की प्रेरणा है, जो उसे कार्य करने के लिए, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। लेकिन दलित छात्रों में शैक्षिक समस्याओं, निर्धनता, बेरोजगारी, बेकारी व उचित पारिवारिक वातावरण न मिल पाने के कारण इसका स्तर निम्न पाया जाता है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार शिक्षा केवल रहने का ज्ञान नही है, वरन् इसका अर्थ है, व्यक्ति में कर्म की आकांक्षा के अनुरूप उसमें कुशलतापूर्वक कार्य करने की पात्र्ाता उत्पन्न करना और सभी यह मानते भी हैं कि बेटा-बेटी यदि अच्छी सफलता या तरक्की करते हैं तो माता-पिता स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते है। आज का किशोर कल का नागरिक है, उसके भावी जीवन में किए गए आचरण व व्यवहार पर सम्पूर्ण देश का विकास निर्भर करेगा।

बालकों के आकांक्षा स्तर को मुक्ष्य रूप से निम्न कारक प्रभावित करते हैं।

1. कार्यो की सफलता तथा असफलता आकांक्षा स्तर को उच्च एवं निम्न श्रेणी का बनाती है। जब विद्यार्थी को एक परीक्षा में सफलता मिल जाती है तो वह आगे होने वाली परीक्षाओं को उत्तीर्ण करना अति सुगम समझता है किन्तु इसके विपरित यदि किसी विद्यार्थी को असफलता मिल जाती है तो वह विद्यार्थी उत्साह खो बैठता है जिससे उसका आकांक्षा स्तर निम्न हो जाता है।

2. आकांक्षा स्तर पर सामूहिक कारको का विशेष प्रभाव पड़ता है।

3. आकांक्षा स्तर व्यक्तित्व की विशेषताओं पर भी निर्भर करता है जिसमें 'अहं' संयोग का प्रमुख स्थान है।

जहाँ तक प्रश्न पारिवारिक वातावरण का है बालक में सर्वप्रथम संस्कारों का बीजारोपण परिवार में ही होता है और अभिभावक उन्हें गीली मिट्टी के सदृश ढाल सकते हैं। उनके अच्छे व बुरे व्यवहार का कारण पारिवारिक वातावरण ही है, लेकिन दलित छात्रों के अभिभावक शिक्षा के प्रति कोई विशेष रूचि नहीं रखते हैं। ये सभ्य समाज से दूर रहते हैं। अतः इनमें शिक्षा के प्रति कोई उत्प्रेरणा नहीं होती है।

## अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकत्र्री ने निम्न लिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है:-

1. राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## साहित्य की समीक्षा

अरोड़ा, श्रीमती रीता (2015) ने - "किशोर लड़कों की समायोजन समस्याओं तथा उनके शैक्षणिक प्रभाव का अध्ययन।" विषय पर पी- एच. डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि- ग्रामीण विद्यार्थियों ने भावात्मक, स्वास्थ्य तथा विद्यालयी समायोजन क्षेत्र में, उच्च अंक प्राप्त किये। शहरी विद्यार्थियों ने तुलनात्मक रूप से सौन्दर्य समायोजन क्षेत्र में अच्छे अंक प्राप्त

किये। समायोजन, प्रशंसा का स्तर तथा उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध पाया गया। ग्रामीण विद्यार्थी विद्यालयी समायोजन, स्वास्थ्य तथा भावात्मक क्षेत्रों में कठिनाई का अनुभव करते हैं।

कपिल, एच के. (2012) ने "राजस्थान के राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत् पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं का अध्ययन" विषय पर शोधकार्य कर निष्कर्ष निकाला कि पिछड़े वर्ग के उत्थान हेतु आयोजित शैक्षिक प्रयत्न नगण्य है, क्योंकि विद्यार्थी की शैक्षिक सफलता उसको प्रदत्त शैक्षिक मार्गदर्शन तथा अनुकूल वातावरण पर आश्रित होती हैं और दलित छात्रों के पास ये दोनों ही सुविधायें नहीं होती। इसलिए आज भी ये पिछड़ेपन के अभिशाप से ग्रस्त हो जाते हैं।

कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, (2013) ने- "हाई स्कूल के विद्यार्थियों की व्यावसायिक आकांक्षाओं का सामाजिक आर्थिक स्तर, उपलब्धि, व्यक्तित्व और सृजनात्मकता से सम्बन्ध" विषय पर पी-एच.डी. स्तर का शोध कार्य पंजाब विश्वविद्यालय में किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि उच्च व्यावसायिक स्तर के लिये यांत्रिकी और शारीरिक आकांक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियो का प्रतिशत उच्च पाया गया और शिक्षण तथा समृद्ध क्षेत्र में निम्न व्यावसायिक स्तर के लिये विद्यार्थियों की आकांक्षा का प्रतिशत उच्च पाया गया जबकि शिक्षण व समृद्ध क्षेत्र में उच्च व्यावसायिक स्तर और यांत्रिकी व शारीरिक क्षेत्र में निम्न व्यावसायिक स्तर के लिये विद्यार्थियो की आकांक्षाओ के प्रतिशत की तुलना में मध्यम यावसायिक स्तर के विद्यार्थियो की आकांक्षा का प्रतिशत इन क्षेत्रो में उच्च पाया गया।

कोठारी, सी.आर. (2016) ने- किशोर छात्राओं की व्यावसायिक इच्छाओं और उनको प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी. स्तर का शोध कार्य हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में किया। शोध के उद्देश्य में लड़कियों की व्यावसायिक इच्छाओं का पता लगाना। लड़कियों की व्यावसायिक इच्छाओं को प्रभावित करने वाले कारणों का पता लगाना। छात्राओं की व्यावसायिक इच्छाओ एवं रूचियों के बीच विचलन का अध्ययन करना। छात्राओं के विभिन्न समूहो के बीच उनकी रूचि के अनुसार व्यावसायिक इच्छाओ तथा उनको प्रभावित करने वाले कारणो के मध्य अन्तर का अध्ययन करना। और शोध के निष्कर्ष में पाया कि छात्राओ की व्यावसायिक पसन्द विचलित हो चुकी थी। व्यावसायिक पसन्द को प्रभावित करने वाले निम्न उच्च कारक जैसे मानवता तथा समाज की सेवा, पिछड़े व गरीबो की सेवा बीमार व अयोग्यों की सेवा करना विभिन्न स्थानों को देखना, किसी को प्रशंसा करना आदि के द्वारा युवाओ के लिए प्रतिमान प्रस्तुत करना। केवल दस प्रतिशत लड़कियां अपनी व्यावसायिक रूचियों के अनुसार स्वयं को व्यावसायिक इच्छाओं के योग्य बनाती है। शहरी और कस्बे की छात्राओं की व्यावसायिक रूचि एवं व्यावसायिक इच्छाओं की दक्षता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इस प्रकार जो छात्रायें उच्च धनी वर्ग से सम्बन्धित होती है उनकी व्यावसायिक रूचि और इच्छाओं में अधिक दक्षता पायी गई।

खान, ए.आर. (2018) ने- "प्रतिभाशाली एवं सामान्य बच्चों की रूचियों, आवश्यकताओं तथा समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन।" विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि- दिल्ली के विद्यार्थियों में 12 प्रतिशत बच्चे प्रतिभाशाली पाये गये। प्रतिभाशाली बच्चे विज्ञान तथा चिकित्सा क्षेत्रों में अधिक रूचि रखते हैं। सामान्य बच्चे साहित्य एवं चिकित्सा तथा तकनीकी क्षेत्रों में अधिक रूचि रखते हैं। प्राकृतिक सौन्दर्य एवं खेल कूद में कम रूचि रखते हैं, दोनों समूहों में साहित्य क्षेत्र, कृषि, हस्तकला तथा घरेलू कार्यो के मामले में कोई अन्तर नहीं पाया गया। समान्य लड़के भी विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य, तकनीकी तथा खेलों के क्षेत्र में अधिक रूचि रखते है।

गोपाल, गुरू 2019 ने - "एम. एड. विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्धों का उनकी अध्ययन आदतों व शैक्षिक सम्प्राप्ति पर प्रभाव" विषय पर पी-एच.डी. स्तरीय शोध अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि- शिक्षित अभिभावकों के बच्चों की अध्ययन आदतें व शैक्षिक निष्पत्ति अनपढ़ अभिभावकों के बच्चों से अधिक थी। इन्होंने यह ज्ञात किया कि स्वीकृति प्राप्त बालक-बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि व अध्ययन, आदतें, निम्न स्वीकृति प्राप्त बालक-बालिकाओं से अच्छी थी।

## अनुसंधान क्रियाविधि

प्रस्तुत लघुशोध में शोधकत्री द्वारा दत्त संकलन हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान' की एक महत्त्वपूर्ण विधि 'सर्वेक्षण विधि' को अपनाया गया है। यह अनुसंधान की एक वैज्ञानिक विधि है। इसके द्वारा एकत्रित दत्त प्रमाणिक एवं विश्वसनीय माने जाते हैं।

सर्वेक्षण विधि का प्रयोग मुख्य रूप से सामाजिक विज्ञानों में वर्तमान की किसी स्थिति, घटना या वैचारिक चिन्तन आदि से सम्बन्धित समस्या के अध्ययन के लिए किया जाता है। इसलिए सर्वेक्षण विधि को सामाजिक अनुसंधान की एक उपयुक्त विधि माना जाता है।

www.ignited.in

सर्वेक्षण अनुसंधान में चूंकि प्रतिदर्श लेकर अध्ययन करते हैं इसलिए इन्हें प्रतिदर्श या न्यादर्श सर्वेक्षण विधि भी कहा जाता है। सर्वेक्षण अनुसंधानों के द्वारा हम वर्तमान की घटनाओं तथा तथ्यों का अध्ययन, विश्लेषण तथा व्याख्या करते हैं। सर्वेक्षण अनुसंधानों का सम्बन्ध वर्तमान में उपस्थित स्थितियों, सम्बन्धों, प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों अभिवृत्तियों (जो स्थापित हो चुके हो), प्रक्रियाएं (जो गतिमान हो), प्रभाव (जो अनुभव किये जा रहे हों) तथा प्रवृत्तियां (जो विकसित हों) आदि के अध्ययन से है। सर्वेक्षण विधि वर्तमान में चल रही किसी घटना, तथ्य, विचार, अभिवृत्ति आदि से सम्बन्धित प्रदत्त संग्रह कर उनकी व्याख्या तथा विश्लेषण करती है।

## डेटा विश्लेषण

राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के प्रथम आयाम- 'अध्यापक एवं शिक्षण से सम्बन्धित कारण' के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना।

**तालिका संख्या. 1**

| छलित वर्ग के छात्र समूह | संख्या (N) | मध्यमान (Mean) | मनक विचलन | क्रान्तिक अनुपात मान | सार्थकता के स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | .05 स्तर | .01 स्तर |
| ग्रामीण छात्र | 120 | 48.93 | 6.12 | 3.977 | | सार्थक अन्तर है। |
| शहरी छात्र | 120 | 45.79 | 6.11 | | | |

(df=120+120-2=238)

**विश्लेषण-:** उपर्युक्त तालिका सं. (1) में दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के प्रथम आयाम- 'अध्यापक एवं शिक्षण से सम्बन्धित कारणों के प्राप्तांकों के आधार पर दोनों समूहों के मध्यमान क्रमशः 48.93 एवं 45.75 तथा मानक विचलन क्रमशः 6.12 एवं 6.11 प्राप्त हुए हैं। इनके आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान (CR-Value) 3.977 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वतन्त्रता के अंश (की) 238 के 0.05 तथा 0.01 विश्वास के स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के प्रथम आयाम-'अध्यापक एवं शिक्षण सम्बन्धित कारणों' में सार्थक अन्तर है।

राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के द्वितीय आयाम- 'सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित कारण' के मध्यमानों के अन्तरों की सार्थकता की तुलना।

**तालिका संख्या 2**

| छलित वर्ग के छात्र समूह | संख्या (N) | मध्यमान (Mean) | मनक विचलन | क्रान्तिक अनुपात मान | सार्थकता के स्तर | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | .05 स्तर | .01 स्तर |
| ग्रामीण छात्र | 120 | 36.39 | 5.23 | 5.079 | | सार्थक अन्तर है। |
| शहरी छात्र | 120 | 33.01 | 5.09 | | | |

(df=120+120-2=238)

विश्लेषण - उपर्युक्त तालिका सं. (2) में दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के द्वितीय आयाम- 'सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित कारणों' के प्राप्तांकों के आधार पर दोनों समूहों के मध्यमान क्रमशः 36.39 एवं 33.01 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.23 एवं 5.09 प्राप्त हुए हैं। इनके आधार पर गणना द्वारा क्रांतिक अनुपात मान (CR-Value) 5.079 प्राप्त हुआ है। जो कि स्वतन्त्रता के अंश (की) 238 के 0.05 तथा 0.01 विश्वास के स्तरों पर क्रान्तिक अनुपात के सारणी मान क्रमशः 1.97 एवं 2.59 से अधिक है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना को विश्वास के दोनों स्तरों (0.05 तथा 0.01) पर अस्वीकृत कर कहा जा सकता है कि राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के द्वितीय आयाम-'सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित कारणों' में सार्थक अन्तर है।

## निष्कर्ष

राजकीय विद्यालयों के दलित वर्ग के ग्रामीण एवं शहरी छात्रों की शैक्षिक समस्याओं के प्रथम आयाम-'अध्यापक एवं शिक्षण से सम्बन्धित कारण', द्वितीय आयाम-'सामाजिक एवं शैक्षिक वातावरण से सम्बन्धित कारण', तृतीय आयाम- 'संगठनात्मक एवं प्रशासनिक कारण' एवं सम्पूर्ण आयामों क योग में ग्रामीण छात्रों में शैक्षिक समस्याएं शहरी छात्रों की तुलना में अधिक पाई गई, अर्थात् ग्रामीण परिवेश के छात्रों को शिक्षा से जुडी समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है, परन्तु शैक्षिक समस्याओं के चतुर्थ आयाम-'ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक कारण' में ग्रामीण एवं शहरी परिवेश के छात्रों में समानता पाई गई अर्थात् सरकारी प्रयासों एवं परम्पराओं में आये बदलावों के कारण शैक्षिक समस्याएं समान रूप से दिखायी देती है। ग्रामीण क्षेत्र के दलित छात्रा कों शैक्षिक समस्याओं का सामना अधिक करना पड़ता है। इसका कारण ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं का अभाव एवं शिक्षा के प्रति जागरूकता में कमी होना हो सकताद है।

## संदर्भ सूची

1. अरोड़ा, श्रीमती रीता (2015): ''शिक्षण एवं अधिगम के मनो सामाजिक आधार'' शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326-327

2. कपिल, एच के. (2012): अनुसंधान विधियाँ'' द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23

3. कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, (2013): ''स्वाध्याय एक साधना'' कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.

4. कोठारी, सी.आर. (2016): ''अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी'' न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2

5. खान, ए.आर. (2018): ''जीवन कौशल शिक्षा'' माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर

6. गोपाल, गुरू 2019: "The Politics of Naming" सेमीनार, पृष्ट 16, नवम्बर 1998

7. चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ (2015): ''पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ'' श्रीविजय इन्द्र टाइम्स नई-दिल्ली, अंक-8, पृष्ठ संख्या-25

8. चौबे, सरयू प्रसाद (2016): ''शिक्षा मनोविज्ञान'' इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न.184

9. चौहान, एस.एस (2014): ''सर्वांगीण बाल विकास'' आर्य बुक डिपो, करोल बाग नई दिल्ली पेज प. 591

10. जायसवाल, सीताराम (2019): 'शिक्षा मनोविज्ञान' आर्य बुक डिपो मंदिर करोल बाग नई दिल्ली पेज 221

11. ढयाल, एसपाठक (2011): "शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर पृष्ठ संख्या-51

12. दाधीच, नरेश एवं अन्य (2012): भारत मे शासन और लोकतन्त्र' भाग-दो, अल्का पब्लिकेशनंल, अजमेर पेज-216

13. माथुर, एस.एस. (2018): "शिक्षा मनोविज्ञान" अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ संख्या-55,76,421.425

14. मित्तल, एम. एन. (2015): "शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार", इन्टरनेशल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, पृ. स.-293-296

**Corresponding Author**

**Salma Khatoon***

Research Scholar, Department of Education, OPJS, University, Churu, Rajasthan

www.ignited.in